No. of Printed Pages : 5

# BHDE–101/EHD-01

## स्नातक उपाधि कार्यक्रम

## ( बी.डी.पी. )

## सत्रांत परीक्षा

## दिसम्बर, 2024

## ( ऐच्छिक पाठ्यक्रम : हिन्दी )

## बी.एच.डी.ई.–101/ ई.एच.डी.–1 : हिन्दी गद्य

समय : 3 घण्टे अधिकतम अंक : 100

---

***नोट :*** *कुल* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।* ***प्रथम*** *प्रश्न अनिवार्य है।*

---

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 3×12=36

(क) और अचानक ही उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब घर की किसी बात में दखल न देंगे। यदि गृहस्वामी के लिए पूरे घर में एक चारपाई की जगह यहीं है, तो यहीं पड़े रहेंगे। अगर कहीं और

डाल दी गई, तो वहाँ चले जाएँगे। यदि बच्चों के जीवन में उनके लिए कहीं स्थान नहीं तो अपने ही घर में परदेशी की तरह पड़े रहेंगे.....और उस दिन के बाद सचमुच गजाधर बाबू कुछ नहीं बोले।

(ख) निर्मला सारी रात रोती रही। इतना कलंक। उसने जियाराम को गहने ले जाते देखने पर भी मुँह खोलने का साहस नहीं किया। क्यों ? इसीलिए तो कि लोग समझेंगे कि यह मिथ्या दोषारोपण करके लड़के से वैर साध रही है। आज उसके मौन रहने पर उसे अपराधिनी ठहराया जा रहा है। यदि वह जियाराम को उसी क्षण रोक देती और जियाराम लज्जावश कहीं भाग जाता, तो क्या उसके सिर अपराध न मढ़ा जाता ?

(ग) आर्य चाणक्य ! संसार में जितने प्रतापशाली राज्य हुए हैं क्या वे सब महामंत्री चाणक्य की राजनीति के बल पर ही हुए हैं ? और जहाँ महामंत्री चाणक्य नहीं हैं, वहाँ किसी राज्य की स्थापना भी नहीं है ? क्या सारे राज्यों की शक्ति महामंत्री

चाणक्य की शक्ति से ही भिक्षा माँगकर संसार में चली है और क्या चंद्रगुप्त इतना हीन है कि उस शक्ति के बल पर ही विजय प्राप्त करता है ?

(घ) राजनीति ? राजनीति ही मनुष्यों के लिए सब कुछ नहीं। राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ न धो बैठो, जिसका विश्व मानव के साथ व्यापक सम्बन्ध है। राजनीति की साधारण छलनाओं से सफलता प्राप्त करके क्षणभर के लिए तुम अपने चतुर समझ लेने की भूल कर सकते हो, परन्तु इस भीषण संसार में प्रेम करने वाले हृदय को खो देना, सबसे बड़ी हानि है।

(ङ) मुझे ऐसा लगता है कि मनुष्य अब नाखून को नहीं चाहता। उसके भीतर बर्बर-युग का कोई अवशेष रह जाए, यह उसे असह्य है। लेकिन यह भी कैसे कहूँ नाखून काटने से क्या होता है ? मनुष्य की बर्बरता घटी कहाँ है, वह तो बढ़ती जा रही है। मनुष्य के इतिहास में हिरोशिमा

का हत्याकांड बार-बार थोड़े ही हुआ है। यह तो उसका नवीनतम रूप है। मैं मनुष्य की ओर देखता हूँ तो कभी-कभी निराश हो जाता हूँ। ये उसकी भयंकर पाशवी वृत्ति के जीवंत प्रतीक हैं। मनुष्य की पशुता को जितनी बार भी काट दो, वह मरना नहीं जानती।

2. 'शरणदाता' कहानी का मूल्यांकन कीजिए। 16

3. 'निर्मला' उपन्यास के आधार पर तोताराम का चरित्र-चित्रण कीजिए। 16

4. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी नाटक का नाटक के तत्वों के आधार पर विवेचन कीजिए। 16

5. हिन्दी नाटकों की परम्परा का विश्लेषण कीजिए। 16

6. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की रंगमंचीय आधार पर समीक्षा कीजिए। 16

7. रेखाचित्र की विशेषताओं के आधार पर 'घीसा' का मूल्यांकन कीजिए। 16

8. हिन्दी कहानी परम्परा में प्रेमचंद का स्थान निर्धारित कीजिए। 16

9. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : 2×8=16

(क) 'उसने कहा था' का लहना सिंह

(ख) 'निर्मला' की भाषा

(ग) भारतेंदुयुगीन निबंध

(घ) 'घीसा' की पटकथा

× × × × × × ×